Online at: https://researchtrendsjournal.com **ISSN No:** 2584-282X

INTERNATIONAL JOURNAL OF TRENDS IN EMERGING RESEARCH AND DEVELOPMENT

Volume 2; Issue 3; 2024; Page No. 121-123

Received: 07-02-2024
Accepted: 18-03-2024

शिक्षा और दर्शन में मानव प्रकृति की सर्वांग अवधारणा का एक दार्शनिक अध्ययन

[1]कृष्णा सिंह अधिकारी, [2]डॉ. प्रवीन त्रिपाठी

[1]शोधकर्ता, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत
[2]एसोसिएट प्रोफेसर, ग्लोकल स्कूल ऑफ एजुकेशन, द ग्लोकल यूनिवर्सिटी, मिर्जापुर पोल, सहारनपुर, उत्तर प्रदेश, भारत

Corresponding Author: कृष्णा सिंह अधिकारी

सारांश
हमारी भारत भूमि चिरकाल से ही अनेक महात्माओं, विद्वानों, तपस्वियों तथा प्रतिभापूर्ण मनीषियों की जननी रही है। भारत के इतिहास में इन महापुरूषों का उदय उस दीप्तिमान नक्षत्र की भांति हुआ जिसके ज्ञान रूपी प्रकाश से यह भारत भूमि जगमगा उठी। जब–जब अधर्म की वृद्धि तथा धर्म का लोप होता गया, तब–तब धर्म की स्थापना के लिए किसी न किसी महापुरूष ने इस पावन धरती पर जन्म लिया। इन महापुरूषों ने समय–समय पर जनता की भलाई की तथा उनकी सोई हुई भावनाओं को जागृत कर उन्हें उनके कर्त्तव्य मार्ग पर अग्रसर होने की प्रेरणा दी। सामान्यता 'दर्शन' का अभिप्राय मानव के विश्वास से होता है। सैद्वान्तिक दृष्टि से इसे मानव के तर्क आधारित विश्वास से भी जाना जाता है। आखिर यह सत्य क्या है? ये कुछ मूलभूत प्रश्न हैं– प्रकृति का वास्तविकता से क्या सम्बन्ध है? यह ब्रह्माण्ड से क्या सम्बन्ध है? दर्शन प्रकृति को व्यापक दृष्टिकोण से देखने का माध्यम है, यह प्रकृति और उसके तत्वों की सार्वभौमिक व्याख्या प्रस्तुत करने का प्रयास है। हम दर्शन को यदि इस आलोक में देखें कि इसके द्वारा मानव स्वयं के बारे में जान सकता है, साथ ही उसका अपने ब्रह्माण्ड से क्या सम्बन्ध है उसे भी जान सकता है।

मुख्य शब्दः मानव प्रकृति, सर्वांग अवधार, दार्शनिक, शिक्षा, इतिहास

प्रस्तावना
हमारे प्राचीन ऋषि–मुनियों ने विश्व को अहिंसा एवं सत्य का सन्देश दिया। विशेष रूप से भगवान बुद्ध तथा महावीर स्वामी जी ने तो साफ कहा था "अहिंसा परमों धर्मः"। जिसका अर्थ है सब प्राणियों से शत्रुता छोड़कर प्रेम भाव से रहना और सब कर्म मानवता की भलाई के लिए करना। इस महान देश की मिट्टी ने ऐसे अनेक महापुरूषों को जन्म दिया जो धार्मिक अन्धविश्वासों, आडम्बरों, मृत प्रायः विचारों और अर्थहीन संकीर्णताओं के विरुद्ध प्रहार करने में कुण्ठित नहीं हुये और इन जर्जर बातों से परे सबमें विद्यमान, सबको नयी ज्योति और नया जीवन प्रदान करने वाले महान जीवन देवता की महिमा प्रतिष्ठित करने में समर्थ हुए। हमारे भारत का यश और सम्मान बढ़ाने में देश के सभी भागों की विभूतियों ने योगदान दिया। इन्होंने जनता के कल्याण के लिए महत्वपूर्ण कार्य किये। भारत में साधु–सन्तों एवं धार्मिक चिन्तकों की कमी नहीं रही। इन्होंने जाति–धर्म एवं ऊँच–नीच के भेद–भाव को व्यर्थ बताया और समाज की बुराइयों को दूर करने का प्रयत्न किया। इन्होंने भारतीय समाज को एकता के धागे में पिरोया और समाज को एक नये मार्ग पर ले जाने का प्रयत्न किया। इन्होंने कोरे पुस्तकीय ज्ञान की अपेक्षा सत्य, अहिंसा, प्रेम और भक्ति में विश्वास किया तथा मानव की भलाई करने में सदैव आगे रहे।

मानव मस्तिष्क में ज्ञान के संचित कोष के निर्माण की प्रक्रिया को शिक्षा के नाम से जाना जाता है। शिक्षा ही वह अप्रतिम व अभूतपूर्व शक्ति है, जो एक मनुष्य को ज्ञानवान, विवेकवान एवं विद्वान बनाने का कार्य करती है। यदि शिक्षा का अभाव होता है तो मनुष्य का जीवन न तो विकास के पथ पर गतिमान हो पाता है और न ही उसे अपने जीवन से जुड़े तथ्यों के अध्ययन की अभिक्षमता ही प्राप्त हो पाती है। ''शिक्षा क्या है? क्या वह पुस्तक–विद्या है? नहीं। क्या वह नाना प्रकार का ज्ञान है? नहीं, यह भी नहीं। जिस संयम के द्वारा इच्छाशक्ति का प्रवाह और विकास वश में लाया जाता है और वह फलदायक होता है, वह शिक्षा कहलाती है।''

शिक्षा और दर्शन का बड़ा ही पुराना सम्बन्ध है। शिक्षा के बिना दर्शन अधूरा होता है और दर्शन के बिना शिक्षा की पूर्णता कदापि सम्भव नहीं है। सम्प्रति मानवीय सद्गुणात्मक वृत्तियों के सुनिर्धारण में शिक्षा की उपादेयता को रेखांकित किया जा सकता है। इसके अभाव में आज सम्पूर्ण विश्व से हम कटे से रह जाते हैं। यदि दुनिया से जुड़कर रहना है तथा सबके साथ–साथ विकास की धारा को सबल करना है तो उसके लिए आवश्यक है कि एक ऐसी ज्ञानात्मक शिक्षा को ग्रहण किया जाय, जो समाज

के लिए नितान्त उपयोगी हो और हितकारिता वृहत स्तर पर जनोत्थानक संदर्भों से आच्छादित हो।

''सम्प्रति भौतिकवादी विकास के दौर में कम ही बच्चे होंगे, जिनके लिए अमूर्तन और भावाभिव्यक्ति की यह दुनिया, भावनाओं का यह संसार, सृजनात्मक उद्यम का यह साम्राज्य एक वास्तविकता न हो। इस दुनिया की सिद्धि आपमें है, इसका कोई आर्थिक या बाहरी उद्देश्य नहीं। हम बच्चे को उत्प्रेरित कर सकते हैं, हम उन्हें उत्साहित कर सकते है, सहानुभूति, साधन और अवसर उपलब्ध करा सकते है, लेकिन बच्चे को विकास की स्वतंत्रता देने की हमारी नीयत में कोई खोट नहीं हो, तो हमें उन पर अपने नियम, कायदे–कानून और नियन्त्रण जबरदस्ती न थोपने की सावधानी बरतनी चाहिए।''

प्राचीन काल से ही भारत में विभिन्न धर्मों तथा मतों के अनुयायी निवास करते रहे हैं, इन सबमें मेल जोल और भाईचारा बढ़ाने के लिए हमारे देश के महापुरूषों ने समय–समय पर महत्वपूर्ण योगदान दिया है। भारत के गौरवपूर्ण इतिहास में अनेक ऐसे महापुरूष हुये हैं जिन्होंने ज्ञान–विज्ञान के क्षेत्र में विशिष्ट उपलब्धियों के कारण प्राचीन काल से ही हमारे देश का नाम सारी दुनिया में विख्यात किया है। साहित्य, कला, विज्ञान, धर्म और दर्शन के क्षेत्र में यहाँ के महापुरूषों ने सदैव समस्त संसार का पथ प्रदर्शन किया है। इन महापुरूषों ने अपनी साहित्यिक प्रतिभा, कला–प्रियता तथा उदार मानवतावादी विचारों से समस्त संसार में गौरव अर्जित किया।

दार्शनिक दृष्टि से कहा जाए तो मानव तीन प्रकार के वस्तुओं के अस्तित्व के विषय में जानकारी चाहता है – (अ) पदार्थ – भौतिक जगत, (ब) अभौतिक (आत्मिक जगत)– जोकि भौतिक जगत से परे है, (स) भौतिक एवं आत्मिक जगत दोनों का जोकि खुद इंसान है। दर्शन के तीन क्षेत्र इन तीनों को पृथकतापूर्वक अध्ययन करते हैं – (अ) अंतरिक्ष विज्ञान – भौतिक जगत से जुड़ा दर्शन, (ब) प्राकृतिक धर्मशास्त्र – ईश्वर एवं आत्मा का अध्ययन करने वाला दर्शन का क्षेत्र (अलौकिक धर्म विज्ञान), (स) तार्किक दर्शन–वह मानव दर्शन जो कि ब्रह्माण्ड की उत्पत्ति, प्रकृति, मानव के भाग्य का अध्ययन करता है। यदि इन तीनों को एक साथ लाये तो वह 'तत्वमीमांसा' कहलाता है अर्थात् दर्शनशास्त्र की वह शाखा जिसमें अस्तित्व, सत्य, ज्ञान का अध्ययन होता हैं। इसीलिए तत्वमीमांसा के माध्यम से उत्पत्ति, प्रकृति एवं मानव नियति के अध्ययन के पश्चात् मानव प्रयासों का उस नियति को प्राप्त करने का अध्ययन उचित है। यही 'व्यवहारिक दर्शन' कहलाता है। यह तीन प्रकार का है जो कि मानव व्यवहार के तीन लक्ष्यों, सत्यं–शिवं–सुन्दरं की प्राप्ति कराता है। प्रथम प्रकार तर्कविज्ञान है जो कि सही तर्क के नियम बताता है जिससे सत्य को ढूंढने मे मदद मिलती हैं। दूसरा 'सौंदर्यशास्त्र' है जिससे मानव को आनन्द की खोज में सहायता मिलती है तथा सौन्दर्य की नींव का निर्माण भी होता है...। तीसरा, नीतिशास्त्र है जो मानव को अच्छे आचरण करने के मार्ग पर ले जाता है। इन्ही के आधार पर ही मानव जीवन के मूलभूत विचारों का निर्माण होता हैं।

दर्शन विज्ञान के समान ही अपनी परिकल्पनाओं को पुष्ट करने के लिए अनुभव तथा तर्क का सहारा लेता हैं। चूंकि दर्शन का विषय क्षेत्र बहुत ही व्यापक होता है जोकि अनुभवातीत है, अतः यह विज्ञान से भी ज्यादा तर्क पर आधारित है। आलोनात्मक व्याख्या एवं विचारशील अध्ययन उसके आवश्यक साधन हैं। विज्ञान तथ्यो का संभावित एवं त्वरित वर्णन करता है जबकि दर्शनशास्त्र अंतिम लक्ष्य के साथ भौतिकता से परे की भी बातें करता है।

इस प्रकार दर्शनशास्त्र को एक ऐसे प्रयास के रूप में परिभाषित किया जा सकता है, जिसके द्वारा मानव अनुभूतियों के सम्बन्ध में समग्र रूप मे सत्यता से विचार किया जाता है अथवा जो सम्पूर्ण अनुभूतियों का बोधगम्य बनाता हैं। अतः दर्शन, किसी एक विशेष दृष्टिकोण के बजाए जीवन के कुछ दुरूह प्रश्नो का शुद्व, सतर्क एवं अनुशसित अध्ययन है। दर्शन पूर्णता पर चिंतन करता है, इसलिए मनुष्य की संसार में स्थिति, मानव जीवन का निहितार्थ, अंतिम लक्ष्य प्राप्ति हेतु मानव प्रयासों की दिशा और मानव जीवन के अनुकूल दशाओं को समझने में सहायक है। व्यापक सन्दर्भों में देखा जाए तो दर्शन वस्तु, पदार्थ, प्रकृति, मानव की उत्पत्ति तथा अंतिक परिणति को परखने की दृष्टि दर्शनशास्त्र से मिलती है। विभिन्न दृष्टिकोण विभिन्न विचारको एवं विभिन्न वस्तुओं की ही देन है।

भारतीय सन्दर्भ में यद्यपि दार्शनिक कारणों एवं परिणामों का अध्ययन करने पर ज्ञात होता है कि प्राच्य एवं पाश्चात्य दोनों ही जगत में इस आधार पर समानता मिलती हैं। किन्तु दार्शनिक जिज्ञासा तथा दार्शनिक विचारधाराओं के विकास की प्रकिया में भिन्नता प्राप्त होती हैं। भारतीय दर्शन तत्वमीमांसा, नीतिशास्त्र, तर्कशास्त्र, मनोविज्ञान आदि का बोध तो कराता है किन्तु इनका एक अलग विषय के रूप में अध्ययन नहीं होता हैं। भारतीय दार्शनिकों द्वारा सभी समस्याओं/कारणों का तत्वमींमासा, नीतिशास्त्र, मनोवैज्ञानिक या तत्वज्ञान जैसे संभावित उपागमों द्वारा अध्ययन किया गया है। भारतीय दर्शन की परम्परा में संश्लेषित दृष्टिकोण मिलता हैं। भारतीय दर्शन के इसी सामंजस्यपूर्ण दृष्टिकोण ने बहुत से वैज्ञानिक विषयों को बहुत ही सुबोध बना दिया था जिन्हें आजकल दर्शन से अलग विषय करने की प्रकिया जारी है।

भारतीय दर्शन की एक मुख्य विशेषता जोकि पाश्चात्य जगत से उसे अलग करता है, वह है कि भारतीय दर्शन विभिन्न प्रकार के वैचारिक मतभेदों के बावजूद उनमे एक निश्चित समानता भी मिलती हैं। भारतीय दर्शन मे यह समानता वस्तुतः उनके नैतिक एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण में समानता के कारण परिलक्षित होती है। सभी विचारधारायें इस निष्कर्ष पर पहुंचती हैं कि दर्शन एक व्यवहारिक आवश्यकता है तथा जीवन का सर्वोत्तम रूप से आनन्द प्राप्त करने के लिए यह अपरिहार्य हैं। भारतीय दर्शन का उद्देश्य जीवन को बौद्विक रूप से समृद्व बनाना तथा मानव जीवन को समर्थ, दूरदर्शी एवं अन्तर्दृष्टि का विकास करना हैं। ज्ञातव्य है कि पाश्चात्य दर्शन का उद्देश्य लोगों की बौद्विक जिज्ञासा शान्त करने तक ही सीमित हैं। भारतीय दर्शन का प्रभाव इस प्रभाव इस कारण ज्यादा है कि सभी दार्शनिक विचारधाराएँ जीवन से अज्ञानता को हटाने की बात करती है, जो कि सभी बुराइयों की जड़ है। इसके साथ ही भारतीय दर्शन प्रकृति के रहस्यों का अध्ययन भी करता है ताकि लोगों को उनके जीवन की दुश्वारियों से मुक्ति मिल सके।

भारतीय दर्शन की विभिन्न विचारधारायें निग्न विषयो पर एकसम्मत राय रखती हैं–

(अ) 'कर्म का सिद्वान्त को चार्वाक दर्शन को छोड़कर भारत के सभी दर्शन कर्म से नियम को स्वीकार करते हैं। शुभ कर्म का फल अनिवार्यतमः शुभ होता है और अशुभ फल का कर्म अनिवार्यतः अशुभ होता हैं। यह नैतिकता के क्षेत्र में काम करने वाला कारण–कार्य नियम हैं। वास्तव में यह कर्म फल का यह विश्वास सामान्य जन में भी समाया हुआ है, इसीलिए हम कह सकते है दर्शन सही अर्थों में भारत में ही जीवन्त हैं।

(ब) प्रत्येक दर्शन हमारी कष्टों से मुक्ति 'सत्य के ज्ञान' के बिना सम्भव नहीं है, जोकि संसार एवं स्वयं को जानने का वास्तविक माध्यम है । सही आनन्द बंधन एवं कष्टो से मुक्ति के बाद ही सम्भब है। बंधन जन्म एवं पुनर्जन्म की प्रकिया है जबकि 'मोक्ष'के माध्यम से इस प्रकिया से मुक्ति मिलती हैं। मुक्ति ही पूर्ण आनन्द की दशा हैं, इस पूर्णता की प्राप्ति इसी जीवन की जा सकती है,

ऐसा कुछ दार्शनिकों का मानना हैं।
(स) सभी चिन्तकों का विश्वास है कि सिर्फ बौद्विक ज्ञान के आधार पर पूर्णता को नही प्राप्त किया जा सकता । इसीलिए ज्ञान को प्रभावी तथा स्थायी बनाये रखने के दो तरीके हैं – प्रथम के अनुसार, स्वीकृत सत्य को बनाये रखने के लिए अनवरत ध्यान का प्रयोग जरूरी है जिससे कि मन में गलत एवं गहरी भ्रान्तियाँ धीरे–धीरे समाप्त हों। दूसरे, व्यवहारिक जीवन में सयंम को अधिक महत्व जिससे निम्न गुणों वाला व्यक्ति भी धीरे–धीरे उच्च गुणों को प्रवृत्त हो जाता है और 'माया मोह' को हटाने में मदद करता हैं। माया–मोह से ही एकाग्रता एवं अच्छे आचरण नकारात्मक रूप से प्रभावित होते हैं। आत्म संयम का तात्पर्य किसी की भावनाओं के दमन से नहीं हैं। अपितु कष्टों से मुक्ति मार्ग हैं। मुक्ति की दशा प्राप्त करने के लिए, नैतिकता सबसे आवश्यम तत्व है।
दर्शन की सर्वोच्च अवस्था 'सत्य का दर्शन' है जो बौद्विकता से परे है, सिर्फ आत्मा की पवित्रता से ही सम्भव है। दर्शन एक आध्यात्मिक अवधारणा है जिससे आत्मा का सन्दर्भ प्रकट होता हैं। आत्म साक्षात्कार हेतु दर्शन की आवश्यकता है। दार्शनिक दृष्टि से कहें तो दर्शन अंतः प्रज्ञा को तार्किक दृष्टि प्रदान कर उसे सिद्व एवं विकसित करता हैं। किसी सन्दर्भ में, दर्शन यदि सामान्य अनुभव अथवा कुछ बुद्विजीवी लोगों के अनुभव पर आधारित हो तो वह तर्क दार्शनिक कल्पनशीलता हैं।

मानव मूल्यों की सर्वांग अवधारणा

एल्डस हक्सले के अनुसार ''मानव अपने जीवन दर्शन के हिसाब से जीता है, उसका संसार के प्रति भी एक विचार होता हैं। यह विचारहीन मनुष्य के लिए भी सत्य हैं। बिना किसी तत्वज्ञान के जीवन असम्भव हैं। हमारे विकल्प, किसी भी प्रकार का या बिना किसी प्रकार का तत्वज्ञान में से नहीं है अपितु हमें हमेशा अच्छा और बुरा तत्वज्ञान में से एक का चयन करना हैं।'' दर्शन की आवश्यकता मानव के तार्किक स्वभाव की परिणति है। वह अपने तर्क से यह जानना चाहता है कि उसका मालिक कौन है? जानवरों के विपरीत मानव चेतनाशील होकर किसी कार्य को (स्वयं को केन्द्र में रखकर) करता है तथा इस बात का ध्यान रखता है कि तात्कालिक के साथ इसके दूरगामी परिणाम क्या होगें? उद्देश्यपूर्ण जीवन विचार को इंगित करते हैं, विचार ही मानव के जीवन का लक्ष्य निर्धारित करता है। यह जीवन कहाँ से मिला है? और इसे कहाँ तक जाना है? जीवन का सार जानने हेतु कुछ आंतरिक प्रश्न हमेशा उठते रहते है। सैंकड़ों वर्षो से करोड़ों लोगों का विश्वास है कि सृष्टि या इस ब्रह्माण्ड की अपनी व्यवस्था है जिसका मानव के लिए विशेष अर्थ हैं। ईश्वर, मानव जीवन का ध्यान रखता है तथा उसके जीवन की घटनाओं को निर्देशित भी करता हैं।

संदर्भ

1. डॉ. पाण्डेय एवं डॉ त्रिपाठी, विश्व के कुछ प्रमुख शिक्षा मनीषी एवं शिक्षा दर्शन, पृ0 165
2. जगदीश चन्द्र मिश्र, भारतीय दर्शन, चौखम्भा सुभारती प्रकाशन, वाराणसी, पृ 580
3. पंचदशीः 1.15, 1.16, उमेश मिश्र, भारतीय दर्शन, पृ0 360
4. उमेश मिश्र, भारतीय दर्शन, उ0प्र0 हिन्दी संस्थान लखनऊ, पृ0 356
5. सिंह राजेश्वर, स्वामी विवेकानन्द का शिक्षा दर्शन परिप्रेक्ष्य, शैक्षिक योजना और प्रकाशन का सामाजिक व आर्थिक संदर्भ, वर्ष–12, अंक–1, पृ0 सं0, 2006, 147.
6. मणि स्यमन्तक मिश्र, धर्म क्षेत्र कर्म क्षेत्र (श्रीमद्भगवद्गीता), प्रकाशक, प्रबोधा शिक्षा समिति, गोरखपुर, 2000
7. वर्मा वेद प्रकाश, नीतिशास्त्र के मूल सिद्धांत, प्रकाशक, अलाइड पब्लिशिंग लि. नई दिल्ली, 1994
8. प्रकाश दया रस्तौगी, आधुनिक भारतीय सामाजिक एवं राजनीतिक चिंतन, प्रकाशक, साधना प्रकाशन मेरठ, 2009
9. डा. अर्जुन मिश्र दर्शन की मूल धाराऍं, प्रकाशक, मध्यपदेश हिन्दी ग्रन्थ अकादमी, भोपाल, 1989.
10. श्रीधर पाण्डेय एवं डॉ. लालजी त्रिपाठी, विश्व के कुछ प्रमुख शिक्षा मनीषी एवं शिक्षा दर्शन, पृ0 146
11. जगदीश चन्द्र मिश्र, भारतीय दर्शन, पृ0 569, सुरभारती प्रकाशन, वाराणसी।

Creative Commons (CC) License
This article is an open access article distributed under the terms and conditions of the Creative Commons Attribution (CC BY 4.0) license. This license permits unrestricted use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original author and source are credited.